ICAR–भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, मुक्तेश्वर द्वारा
विश्व दुग्ध दिवस के अवसर पर एक दिवसीय जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद-भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान (ICAR-IVRI), मुक्तेश्वर के प्रसार शिक्षा अनुभाग द्वारा विश्व दुग्ध दिवस के अवसर पर संस्थान परिसर में एक दिवसीय जागरूकता एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम संस्थान के प्रधान वैज्ञानिक प्रभारी संयुक्त निदेशक डॉ. शेर सिंह के निर्देशन में आयोजित किया गया। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य किसानों को दुग्ध उत्पादन, दुग्ध संरक्षण, पशुधन आधारित कृषि एवं वैज्ञानिक कृषि तकनीकों के प्रति जागरूक करना था।

इस कार्यक्रम में 6 विभिन्न गांवों से लगभग 30 किसानों ने प्रतिभाग किया। कार्यक्रम के दौरान डॉ. मनीष तोमर ने किसानों को संबोधित करते हुए दुग्ध संरक्षण की वैज्ञानिक विधियों तथा पशुधन के बहुआयामी उपयोग के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने बताया कि दूध केवल पोषण का महत्वपूर्ण स्रोत ही नहीं है, बल्कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था का एक मजबूत आधार भी है। उन्होंने किसानों को समझाया कि पशुपालन आधारित खेती प्रणाली में दूध एवं गोबर दोनों का अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान है। दूध से जहां परिवार को पोषण एवं आय प्राप्त होती है, वहीं गोबर का उपयोग जैविक खाद के रूप में कर खेतों की उर्वरता बढ़ाई जा सकती है तथा टिकाऊ कृषि को बढ़ावा दिया जा सकता है।

डॉ. तोमर ने किसानों को यह भी बताया कि पर्वतीय क्षेत्रों में पशुधन आधारित कृषि प्रणाली आय वृद्धि और जैविक खेती के लिए अत्यंत उपयोगी है। उन्होंने पशुओं के उचित प्रबंधन, दुग्ध गुणवत्ता बनाए रखने तथा गोबर के वैज्ञानिक उपयोग के संबंध में भी महत्वपूर्ण जानकारी साझा की।

कार्यक्रम के क्रम में डॉ. नितेश द्वारा किसानों को लिक्विड कैल्शियम के उपयोग एवं उसके लाभों के बारे में जानकारी दी गई। उन्होंने बताया कि फसलों में लिक्विड कैल्शियम के संतुलित उपयोग से पौधों की वृद्धि बेहतर होती है, गुणवत्ता में सुधार आता है तथा उत्पादन क्षमता बढ़ती है। किसानों को इसकी उपयोग विधि एवं विभिन्न फसलों में इसके व्यावहारिक महत्व के बारे में भी विस्तार से समझाया गया।

कार्यक्रम के अंत में डॉ. शेर सिंह ने किसानों को सरकार की “खेत बचाओ” योजना तथा संतुलित उर्वरक उपयोग के महत्व के बारे में जानकारी दी। उन्होंने किसानों को बताया कि रासायनिक उर्वरकों का संतुलित उपयोग, जैविक संसाधनों के समन्वित प्रयोग के साथ अपनाने से मिट्टी का स्वास्थ्य बेहतर बना रहता है तथा दीर्घकाल में खेती अधिक लाभकारी और टिकाऊ बनती है।

कार्यक्रम में उपस्थित किसानों ने विषयों में गहरी रुचि दिखाई तथा दुग्ध उत्पादन, पशुपालन, जैविक खाद एवं उर्वरक उपयोग से संबंधित कई प्रश्न पूछे, जिनका विशेषज्ञों द्वारा विस्तार से समाधान किया गया।

इस आयोजन के माध्यम से किसानों को विश्व दुग्ध दिवस के महत्व, दुग्ध संरक्षण, पशुधन आधारित कृषि तथा टिकाऊ खेती की वैज्ञानिक तकनीकों के प्रति जागरूक किया गया। संस्थान के निदेशक डॉ. राघवेंद्र भट्टा ने कार्यक्रम के सफल आयोजन पर पूरी टीम को शुभकामनाएं दीं।